**National Journal of Multidisciplinary Research and Development**
**ISSN: 2455-9040**
**Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.nationaljournals.com**
**Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 730-731**

# कृष्णा सोबती की कहानियों में नारी जीवन के विविध रूप

**शैलेन्द्र प्रताप**
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

## प्रस्तावना

आधुनिक कथा साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर कृष्णा सोबती अपनी बेबाक लेखनी के लिए चर्चित रही हैं। उनका साहित्य आदर्शों की भव्यता से अलग हटकर यथार्थ के मर्म को उद्घाटित करता है। उन्होंने अपने नारी पात्रों के माध्यम से उस बिम्ब को अभिव्यक्ति दी है जो उसके अवचेतन से बाहर निकलकर चेतन पटल पर अंकित हो। उन्होंने अपने साहित्य में नारी सम्बन्धी परम्परागत मिथकों को ध्वस्त किया है तथा नारी की नूतन परिकल्पना को प्रस्तुत किया है। कृष्णा सोबती के साहित्य में नारी की वैयक्तिक अनुभूतियों, इच्छाओं, आकांक्षाओं, प्रेम और सेक्स को गहरे मानवीय बोध के साथ अंकित किया गया है। उन्होंने नारी मन की अकुलाहट, बेचैनी और स्वतंत्र होने की इच्छा को सार्थक अभिव्यक्ति दी है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सीमाओं और अर्थों को उन्होंने पहचाना है तथा उसे कभी भी उच्छृंखल रूप में नहीं देखा है। उनका मत है 'व्यक्तिगत स्वतंत्रता केवल यौन स्वतंत्रता ही नहीं है। इसकी सीमाएं बहुत बड़ी हैं। विपरीत टेक पर आप सामाजिक मान्यताओं से सजे–धजे मर्यादा में लैस होकर भी वस्त्रहीन दिख सकते हैं, वे हैं जो आपके विवेक और आपकी स्वतंत्र सत्ता को परिभाषित करते हैं, आपकी विवशताओं को नहीं।'[1]

सोबती वैयक्तिक स्वतंत्रता को महत्व देने वाली लेखिका हैं। विवशताओं, परम्परागत मर्यादाओं, पाप–पुण्य, नैतिक अनैतिक से ज्यादा महत्व व्यक्ति और व्यक्तित्व को देती है। नारी के स्वतंत्र निर्णय लेने, प्रेम करने और प्रेम पाने की सहज मानवीय प्रवृत्ति को उन्होंने महत्वपूर्ण माना है। नारी के लिए पुरुष के आकर्षण और यौन इच्छाओं की प्रवृत्ति को सहज रूप से अभिव्यक्ति दी है। 'अब स्त्री अपनी अभिव्यक्ति में सैक्सुअल मनोवृत्तियों और प्यार को लेकर अपने भावों को भी व्यक्त कर कहने लगी है।'[2] उनके साहित्य में यथार्थ और आदर्श की अतिशयोक्ति का आग्रह नहीं है। महज एक लेखकीय ईमानदारी और वह दृष्टि है जो दूर तक देखी जा सकती है। उनकी रचनाओं में नारी–पुरुष संबंध, उनकी भौतिक/शारीरिक इच्छाओं को वाणी दी गई है। उनका मानना है, 'मानवीय अस्तित्व का यह प्राकृतिक सम्मिश्रण है। ऐसे सनातन भाव और क्रियाओं को मात्र शारीरिक क्रिया के रूप में सीमित करके यहाँ–वहाँ इसकी उसकी खिल्ली उड़ाना देह से रिसने–रिसाने के दैहिक तथ्यों का मजाक करना मानवीय संहिता के विरूद्ध है।'[3] उन्होंने ने नारी व्यक्तित्व और अस्मिता को नई पहचान दी है। उनकी नारी पात्र अदम्य साहस, जिजीविषा से युक्त हैं। जो भी हो, जैसी भी हो वह जीना चाहती है, अपने होने का बोध कराती है और परम्परागत रूढ़ मूल्यों का पुरजोर विरोध करती है। उनकी कहानियों में चित्रित नारी चरित्रों के माध्यम से उनकी निरन्तर परिपक्व होती दृष्टि को जाना समझा जा सकता है।

'बादलों के घेरे' कहानी प्रथम द्रष्टया रोमानी कहानी लगती है किन्तु उसकी आन्तरिक बुनावट से कठोर वास्तविकता सामने आती है। कहानी में मन्नो क्षय रोग ग्रस्त है। कहानी उस समय लिखी गई जब क्षय रोग का उपचार नहीं था। उस समय व्यक्ति को अकेले सैनेटोरियम में रहने को छोड़ दिया जाता था। सारे संबंध, रिश्ते–नाते शून्यता में विलीन हो जाते थे। कोई उसके पास नहीं जाता था और मनुष्य भावात्मक रूप से टूट जाता था उस संबंध शून्यता और भावात्मक टूटन का अंकन इस कहानी में किया गया है। कहानी का पात्र रवि जब मन्नों से मिलता है तो सहज ही उसकी ओर आकर्षित हो जाता है, परन्तु मन्नो के क्षय रोग से ग्रस्त होने के कारण वह मीरा से विवाह कर लेता है। विवाह के कुछ दिनों बाद रवि को भी क्षय रोग हो जाता है, तब उसे मन्नो की दुर्दशा का भान होता है। उसे एहसास होता है कि 'तन के रस रीत जाने पर हाड़ मांस सब काठ हो जाते हैं।'[4] कहानी में एक तनाव, एक पीड़ा, एक रोग, एक भय है जो रवि को घेरे है, कहानी को घेरे है। रवि क्षय रोग युक्त अवस्था में अपनी पत्नी मीरा नहीं मन्नों को अपने पास पाता है। उसे लगता है कि मन्नो उसे झेल लेती। वह सोचता है, 'जिस मीरा को मैंने वर्षों जाना है, वह अब आप सी नहीं लगती। उसे मैंने छू–छूकर छुआ था, चूम–चूमकर चूमा था, पर मन पर जब मोह और प्यार की उछलन आती है तो मीरा नहीं मन्नो की आंखे ही सगी दीखती हैं।'[5]

रवि अकेलेपन से घबराता है मिलने आये पत्नी बेटे और बेटी से सहानुभूति चाहता है पर उसे मिलता है एक ठंढा एहसास, एक डर ठीक वैसे ही जैसे मन्नो के लिए हुआ था। इस कहानी में लेखिका ने रवि के माध्यम से उस सत्य को उजागर किया है जो मन्नो के दर्द को तभी समझता है जब स्वयं उसका भुक्त भोगी बनता है। मन्नो कभी किसी से कुछ नहीं कहती रवि को भी अपने से दूर करती है– रवि, जिसे तुम झेल नहीं सकते, उसके लिए हाथ न बढ़ाओ।'[6] जिस दुर्बलता से कायर बनकर रवि डरा था, एक दिन वह उसके ऊपर ही बीत गई तभी वह अपने लिए और मन्नो के लिए उस कायरता को कोसता है।

'बहनें' कहानी में स्त्री यातना के सामाजिक संदर्भों को उद्घाटित किया गया है। कहानी में बड़ी बहन के बेटे 'धर्म' की शादी में वर्षों बाद मिली बहनों की मनोदशा का मार्मिक चित्रण किया गया है। एकही आंगन में खेली–कूदी पर बड़ी होकर वे दूर–दूर किनारों से जा लगी। उसके घर आंगन बदल गये, प्यार के नाते बदल गये और फिर इसी तरह कभी–कभी शादी ब्याहों में दो चार दिनों का मेल फिर भर्राये कण्ठों से विदाई। यहाँ भी बड़ी बहन की सास से सत्ता का अधिकार छिन गया है– 'आज बुढ़िया की आंखों में नहीं बड़ी के चेहरे पर उस अधिकार का बोध है। अब वह स्वयं सास बनने जा रही है तो किसी से क्यों डरेगी।'[7] इस कहानी में एकही माँ की गोद में पली–बढ़ी बहनों की उस स्थिति का चित्रण है, जो एक दूसरे का सुख–दुख नहीं बांट सकती क्योंकि अब वे एक नहीं उनके घर एक नहीं, उनके प्यार के नाते एक नहीं वे तो जैसे एकही घर आंगन से उठकर अलग–अलग किनारे जा लगी हैं।

सोबती 'दैहिक और लौकिक सुखों को छोटा करके देखने में यकीन नहीं करती। खासतौर से किसी आध्यात्मिक और अमूर्त जीवन के नाम पर'[8] 'बदली बरस गई' कहानी में विधवा साध्वी माँ और उसकी बेटी कल्याणी के माध्यम से जीवन के कई सत्यों का उद्घाटन

किया गया है। कल्याणी की माँ तो आश्रम में आकर मोह–माया से विरक्त हो जाती है परन्तु कल्याणी यौवन की दहजीज पर कदम रखते ही आश्रम के नियमों को ताक पर रख देना चाहती है। कल्याणी सुबह–शाम भोजन गृह में काम करती, पूजा के लिए फूल चुनती और शेष समय बातों में रस के लिए इधर–उधर भटकती। वह अपने तन–मन की बात किसी से कहना चाहती थी परन्तु उसे सुनने वाला वहाँ कोई न था। गाढ़े की कुरती और जोगिया धोती उसे रास न आते। उसके मन में यौवन की आकांक्षाओं ने जन्म ले लिया था। वह माँ की तरह आश्रम में नहीं रहने वाली। आश्रम की ड्याढी में किसी भक्त के परिवार और दो बच्चों को देखकर कल्याणी के मन का सूनापन छट गया। उसमें निर्णय लेने की क्षमता आ गई, उसका विवेक जागृत हो गया था। उसे अब अपना घर चाहिए था– 'मैं अब अपना घर बनाकर रहूँगी।'[9] वह अपना निर्णय महाराज और साध्वी माँ को सुनाती है, इसलिए नहीं कि उसे आज्ञा चाहिए, वह बता देना चाहती है कि आज्ञा हो न हो उसे जाना है। आश्रम की कोठरी के दमघोटू माहौल से बाहर निकलकर उसे अपने घर की राह लेनी है। लेखिका ने कल्याणी के माध्यम से अल्हण नवयुवती के मन के भावों तथा घर परिवार के प्रति उसके सहज आकर्षण का अंकन किया है। उसकी पहचान और निर्णय लेने की क्षमता के साथ–साथ उसकी अस्मिता को भी स्वर दिया है।

'सिक्का बदल गया' कहानी विभाजन की त्रासदी को धैर्य और साहस से झेलती नारी की कहानी है। यह कहानी देश के विभाजित होते ही रिश्ते–नातों के यकायक बदल जाने और झूठे पड़ जाने की पीड़ा का संवेदनशील साक्ष्य है। एक लम्बे अर्से से शाहनी का 'चेनाब' से गहरा संबंध रहा है। इसी के किनारे वह दुल्हन बनकर आई और इसी के ठंडे पानी में नहाती रही। आस–पास बिखरी जमीनें तो उसकी हैं ही साथ ही उसके प्यार और ममता में बंधे लोग भी उसके अपने हैं। शाहनी के पास सब कुछ है ठाट–बाट प्यार दुलार किन्तु परिस्थिति की मजबूरी के कारण उसे सब कुछ छोड़ना पड़ता है। शाहनी के मन में गहन अंतर्द्वन्द उठता है किन्तु 'शाहनी रो धोकर नहीं। शान से निगलेगी इस पुरखों के घर से मान से लांघेगी यह देहरी।'[10] तकलीफ देह वास्तविकता का सामना करते हुए शाहनी सबको सलामती की दुआ देती है क्योंकि राज बदल गया है सिक्का बदल गया है।

'आजादी शम्मोजान की' कहानी के माध्यम से स्त्री शरीर की अन्तर्यात्रा को प्रस्तुत किया गया है। स्वाधीनता के स्वागत में जब बाहर गली में झंडिया खड़खड़ा रही थीं, झण्डे हवा में लहरा रहे थे, चिराग हल्के हल्के जल रहे थे और लोग एक दूसरे के गले मिल रहे थे, शम्मोजान अपनी उसी बोसीदा कोठरी में दल्ले द्वारा लाई गई 'अच्छी चीज' के साथ 'अपनी पुरानी आजादी बांट रही थी, जो उसके पास शायद अभी भी बहुत थी।'[11] देश के आजाद होने पर मुन्नी अट्टहास कर उठती है। 'आजादी तो हमारे पास है, हम सा आजाद कौन होगा शम्मोजान।'[12] ये औरतें तो हमेशा से ग्राहकों को टेरने के लिए आजाद हैं। उनके लिए कुछ भी नया नहीं है। इस कहानी में उस औरत की बदहाली, घुटन, पीडा, यातना का यथार्थ अंकन है जो समाज का हिस्सा होते हुए भी सामाजिक अस्वीकृति और उपेक्षा का शिकार है।

कृष्णा सोबती की कहानियों में नारी की भावनाओं शारीरिक आवश्यकताओं, मानसिक समस्याओं और जीवनेच्छा पर गहराई से विचार किया गया है। नारी की वैयक्तिक अनुभूतियों प्रेम तथा सेक्स को गहरे मानवीय बोध के साथ अंकित किया गया है। उन्होंने नारी मन की अकुलाहट और स्वतंत्र होने की इच्छा को सार्थक अभिव्यक्ति दी है। अदम्य जिजीविषा ऊर्जा और हिम्मती तेवरों से युक्त नारी की उद्भावना उनके लेखन में दृष्टिगोचर होती है। बदलते परिवेश में संवेदन शून्य होती जा रही मानवता और उसका दंश झेल रहे व्यक्ति के जीवन की कारूणिक उपस्थिति भी उनके लेखन में देखने को मिलती है। बंटवारे और साम्प्रदायिक दंगों में तार–तार होते मानवीय मूल्यों और उस त्रासदी से सर्वाधिक पीड़ित स्त्री का दर्द बड़े ही मार्मिक ढंग से उनकी कहानियों में उभरा है। उन्होंने नारी जीवन का विश्लेषण वैयक्तिक यथार्थ के स्तर पर किया है। उनके नारी पात्रों में स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता के साथ ही अपनी भाषा, अस्तित्व तथा अस्मिता का बोध है।

## संदर्भ


1. कृष्णा सोबती : सोबती एक सोहबत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989, पृ. 401
2. कृष्णा सोबती, कृष्ण बलदेव वैद : सोबती–वैद संवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ. 148–149
3. वही, पृ. 114
4. कृष्णा सोबती : बादलों के घेरे में, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. 10
5. वही, पृ. 29
6. वही, पृ. 26
7. वही, पृ. 56
8. मधुरेश – हिन्दी कहानी : अस्मिता की तलाश, आधार प्रकाशन, पंचकूला हरियाणा, 1997, पृ. 308
9. कृष्णा सोबती : बादलों के घेरे में, पृ. 67
10. वही, पृ. 127
11. वही, पृ. 131
12. वही, पृ. 130